B.A. (Part-I) EXAMINATION, 2018

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र—आदिकाल एवं भक्तिकाल

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

सभी (लघूत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें। लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दें। इसी प्रकार किसी भीएक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल करें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें।

1. 'कबीर एक समाज सुधारक थे।' इस कथन के आलोक में कबीर की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन सोदाहरण सहित कीजिए।

अथवा

'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता पर एक निबन्ध लिखिए। 15

2. तुलसी की भक्ति भावना पर सोदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मीरा की विरह-वेदना पर उदाहरण सहित निबन्ध लिखिए। 15

3. 'रसखान रस की खान है' इस कथन की सोदाहरण सहित स्पष्ट व्याख्या कीजिए।

अथवा

जायसी की काव्य सौन्दर्य की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। 15

4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये- 15
   (i) पृथ्वीराज की ऐतिहासिकता
   (ii) निर्गुण व सगुण काव्य में अन्तर
   (iii) 'ढोला मारू रा दूहा' काव्य लोकजीवन की सफल अभिव्यक्ति है।' स्पष्ट कीजिए।
   (iv) 'भक्तिकाल को स्वर्णयुग कहा जाता है।' स्पष्ट करें।

5. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 4×10

(क) सखि हे कतहु न देखि मधाई।
काँप सरीर धीर नहिं मानस, अवधि नियर भेल आई।
माधव मास तिथि भयो माधव, अबधि कहय पिआ गेला।
कुच-जुग संभु परसि कर बललन्हि। तें परतीति मोहि भेला॥
मृगमद चानन परिमल कुंकुम के बोल सीतल चन्दा।
पिया बिसलेख अनल जो बसिए, बिपति चिन्हिए भेल मंदा।
भनइ विद्यापति सुन बर जौवति, चित जनु झंखइ आजे।
पिय बिसलेख-कलेस मेटायत, बालम बिलसि समाजे॥ 10

अथवा

मूँवा पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौंणै काम॥
चोट सगही बिरह की, सब तन जर जर होइ।
मारण हारा जाँणिहै, कै जिहिं लागी सोइ॥

जबहूँ मार्‌या खैंचि करि, तब मैं पाई जाँणि।
लागी चोट मरम्म की, गई कलेजा जाँणि॥

(ख) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सौ गयौ स्याम सँग, कौ अवराधै ईस॥
इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारें नंद-नँदन बिनु, और नहीं जगदीस॥ 10

अथवा

सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन, तिन्हैं समुझाइ, कछु, मुसकाइ चली॥
तुलसी ते हि औसर सौंह सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं।
अनुराग-तड़ागमें भानु उदैं बिगसीं मनो मंजुल कंजकलीं॥

(ग) फरे आँब अति सघन सोहाए। औ जस फरे अधिक सिर नाए॥
कटहर डार पींड सन पाके। बड़हर, सो अनूप अति ताके॥
खिरनी पाकि खांड़ अस मीठी। जामुन पाकि भँवर अति डीठी॥
नरियर फरे फरी फरहरी। फुरै जानु इन्द्रासन पुरी॥
पुनि महुआ चुअ अधिक मिठासू। मधु जस मीठ पुहुप जस बासू॥
और खजहजा अनबननाऊँ। देखा सब राउन अमराऊँ॥
लाग सबै जस अमृत साखा। रहै लोभाइ सो जो चाखा॥
लवँग सुपारी जायफल सब फर फरे अपूर।
आसपास घन इमिली औ घन तार खजूर॥ 10

अथवा

जोगी! मत जा, मत जा, मत जा,
पाँइ, पऊँ, मैं चेरी तेरी हौ।
प्रेम – भगति को पेडौं ही न्यारो, हम कूँ गैल बता जा।
अगर – चन्दण की चिता बणाऊँ, अपणै हाथ जला जा।
जल-बल भयी भसम की ढ़ेरी, अपणै अंग लगा जा।
मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा॥

(घ) खेलत फाग सुहाग भरी अनुरागहिं लालन कों धरि कै।
मारत कुंकुम केसरि के पिचकारिन में रँग कों भरि कै॥
गेरत लाल गुलाल लली मन मोहिनी मौज मिटा करि कै।
जात चली रस खानि अली मदमस्त मनों मन कों हरि कै॥ 10

अथवा

राज चित्त कैमास। चित्त कैमास दासि गय॥
नीर चित्त बर कमल। कमल चित्त बर भान गय॥
भँवर चिन्त भमरी सु। भँवर रत्तौ सु कुसम रस॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ। लोय रत्तौ सु अधम रस॥
उतमंग ईस धरि गंग कौ। गंग उलटि फिर उदधि मिलि॥